# सत्य साहित्य

वर्ष 53 / अंक 4
अप्रैल
2015

मूल्य ₹ 5
**सत्य साहित्य,** श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

# सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

115

जंगला ताल ३

आज सखी सतगुरु घर आये
मेरे मन आनन्द भयो री। आज....

(1) दर्शन से सब पाप विनाशे
दुःख दारिद्र सब दूर गयो री। आज...

(2) अमृत वचन सुनत तम नाश्यो
घट भीतर प्रभु पाय लयो री। आज...

(3) जन्म जन्म के संशय दूरे
भव भय ताप मिटाय दयो री। आज...

(4) ब्रह्मानंद दास दासन को
चरण कमल लिपटाय रह्यो री। आज सखी....

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

## इस अंक में पढ़िए


- भजन
- परम पूजनीय महाराज जी के 75वें अवतरण दिवस पर लख लख बधाई!
- बच्चों के लिए
- प्रार्थना : गुरुजनों के श्रीमुख से
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेन्डर
- 'सत्य साहित्य' के उद्देश्य और नियम


सत्य साहित्य

# लख लख बधाई !

**समस्त साधकगणों को परम पूजनीय महाराज जी के 75वें अवतरण दिवस पर लख लख बधाई!**

# साधना की सजीव, साकार प्रतिमा - परम पूजनीय महाराज जी

पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने अपनी साधना–पद्धति से जैसे आध्यात्मिक व्यक्तित्व के विकास का सैद्धान्तिक पक्ष अपने ग्रंथों में प्रस्तुत किया है उसकी साकार मूर्ति थे– ब्रह्मलीन संत श्री डॉ. विश्वामित्र जी महाराज। जितने भी गुण एक साधक में होने चाहिएँ उसकी कसौटी महाराज जी ने अपने आचरण के माध्यम से प्रस्तुत की। सिद्धान्त और व्यवहार की ऐसी एकरूपता अन्यत्र दुर्लभ ही है। कथनी और करनी में रत्ती भर भी फर्क नहीं था। पूरा जीवन एक खुली किताब की भाँति था जिसे पढ़कर कोई भी साधक अपने जीवन में उसे उतार सके। समय की प्रतिबद्धता उपदेश में नहीं, कर्म में विद्यमान थी। प्रत्येक कार्य इतने निश्चित समय पर, कि घड़ी की सुई मिलाई जा सके। प्रेम तो जैसे नेत्रों से छलक ही पड़ता था। मार्गदर्शक के रूप में फूल से भी कोमल परन्तु साधक के रूप में वज्र से भी कठोर थे। स्वामी जी की पद्धति में किंचित–मात्र भी परिवर्तन के पक्ष में नहीं थे। सत्संग की परिशुद्धता को यथावत् बनाए रखा। किसी भी प्रकार की यश–मान प्रतिष्ठा से सदैव अपने को दूर रखने का पाठ साधकों को अपने आचरण से पढ़ाया। जीवन का एक ही लक्ष्य था– राम–नाम की उपासना, राम नाम का प्रसार।

गुरूडम से स्वयं को दूर रखा। दीक्षा देते समय भी हमेशा कहा– "मैं आपका गुरू नहीं हूँ आपके गुरू स्वामी जी महाराज हैं।" प्रत्येक व्यास–पूर्णिमा पर पूरे समय खड़े रहकर लोगों को स्वामी जी के चरणों में अर्पित करने के लिए पुष्प देने का काम स्वयं करते थे। स्वयं से साधक को न जोड़कर परमात्मा से जोड़ने का जो काम पूज्य स्वामी जी ने आरम्भ किया था उसे ही निरंतर आपने आगे बढ़ाया। राम–नाम के नाते वे सबके सम्बंधी थे और सांसारिक नाते से वे सबसे पृथक् थे। दृष्टि इतनी पैनी थी कि छोटी–से–छोटी बात भी उनसे कभी छिप नहीं पाती थी। मन की बात समझने की अद्भुत क्षमता थी। बिना पूछे ही सारे प्रश्नों के समाधान दे दिया करते थे। ऐसा अनुभव करने वाले अनेक साधक हैं। ईश्वर प्रणिधान जैसे कठिन विषय को,

**जीवन डोरी सौंप दो,**
**रामजी के हाथ में।**
**डगर-डगर पर पाओगे,**
**रामजी को साथ में।।**

गाकर समझाने की अद्भुत क्षमता आप में थी। किसी भी विषय पर अत्यंत संक्षिप्त, बेबाक तथा सारगर्भित प्रवचन आपकी विशेषता थी। "जो इस सांसारिक जीवन में प्रामाणिक नहीं हैं वे परमात्मा के यहाँ कैसे प्रामाणिक हो सकते हैं" ऐसा उपदेश आप साधकों को देकर उनके दोनों लोक सुधारना चाहते थे। ऐसी दिव्य विभूति के जन्म–दिवस के अवसर पर उनके चरणों में यही प्रार्थना ही की जा सकती है कि हमारा जीवन भी राम–मय बना दें, साधनामय बना दें। अपनी जैसी राम–भक्ति और राम–नाम में अटूट विश्वास हम साधकों को भी प्रदान करें।

*(एक वरिष्ठ साधक)* ■

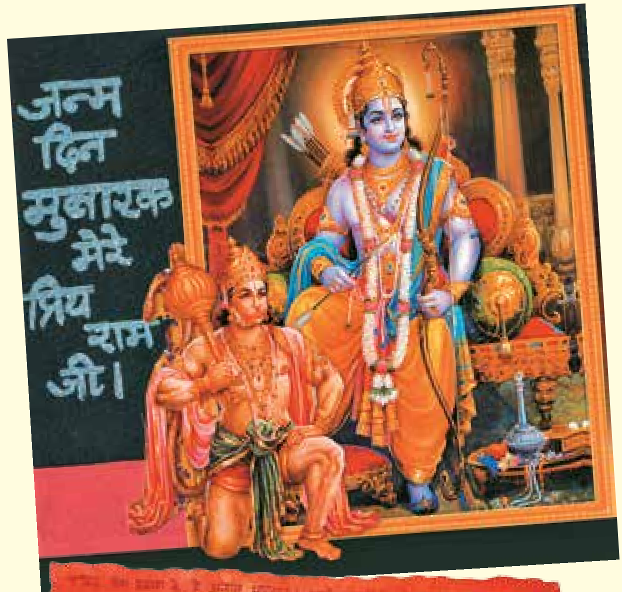


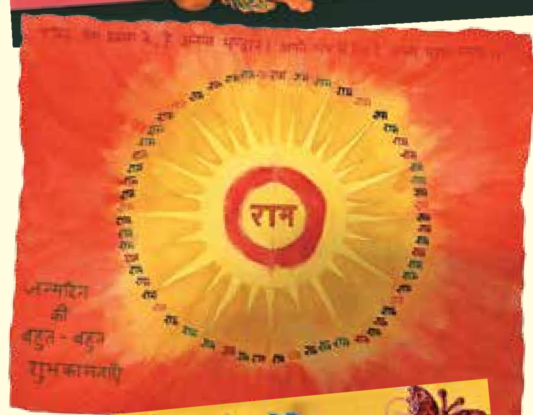

(परम पूजनीय महाराज जी के जन्मदिवस पर उनको बच्चों द्वारा दिए गए कुछ कार्ड)

## परम पूजनीय महाराज जी को उनके जन्मदिवस पर मिली शुभकामनाओं के उत्तर।

*(परम पूजनीय महाराज जी के साथ साधकों के पत्राचार के अंश)*

**पूजनीय महाराज जी :** आप हमेशा प्रभु के कृपा पात्र बने रहें। मेरे जन्मदिवस पर आपकी शुभकामनाओं के लिए अत्यन्त धन्यवाद। सप्रेम जय जय राम।

**पूजनीय महाराज जी :** आपकी अभूतपूर्व सफलता पर आपको बधाई...। आप हमेशा उसके कृपा पात्र बने रहें। मेरे जन्मदिवस पर आपकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। सप्रेम जय जय राम।

**पूजनीय महाराज जी :** 15 मार्च अपने जन्मदिवस पर आपके आशीर्वाद का प्रार्थी हूँ। कृपया आशीर्वाद दें एवं मेरे लिए प्रार्थना करें कि प्रभु हमेशा मुझे अपनी गोद में रखें जिस प्रकार एक माँ अपने नवजात शिशु को रखती है।

**पूजनीय महाराज जी :** इस शरीर के जन्म दिवस पर आपकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। प्रार्थना करें कि प्रभु इच्छानुसार गंगा में समाहित होने से पहले यह शरीर मानव सेवा करे, सेवा करे और सेवा करे। सप्रेम जय जय राम।

*(परम पूजनीय महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं)* ■

# 'To My Maharaj ji'

On this very auspicious day,
Seventy and five years ago,
The world rejoiced, a saviour was born,
Again did Thakur assume a human form.

Would to God we had the ears,
To hear the celestial strain,
“He is my son, nay, I am he”
Would be the heavenly proclaim.

How can we thank the Lord enough,
In His causeless mercy who gave us thee,
Had we to search thee out ourselves,
In vain would many births have been.

From deeksha to moksha,
From awakening to enlightenment,
From darkness unto light,
Verily thou art the bridge.

From ephemeral to eternal,
From unreal to real,
From ignorance to knowledge,
Only thou can guide the way.

Twice born was I on deeksha day,
My spiritual pilgrimage did begin,
The path which was a razor's edge,
Became easy by thy grace.

All the happiness in my life,
Mysteriously came from but thy grace,
Sorrow, misery, pain and anxiety,
The culprit was the rascal “I”.

From thou who art the wish-fulfilling tree,
Worldly trifles I seek not from thee,
The highest blessing of ajapa jaap,
In thy unbounded mercy do bestow on me.

O glorious embodiment of divinity,
Wisdom, love, light and bliss,
Mould me into thy likeness,
Satsang like the sandalwood tree.

Our self-effort is all in vain,
Thy grace our only refuge,
Free us from the meshes of maya,
Ferry us across the ocean of samsara.

Thou who art our sole redeemer
Our only saviour thou,
Thy blessings shall I forever seek,
Grant me shelter at thy hallowed feet.

Sins have I committed a many,
No crime left undone,
Still my fate haunts me not,
For thee I have with me.

So when I go to trial,
On final judgement day,
Surely will I stand redeemed,
For thou shall plead my case.

For what I know thou hast done for me,
For that which shall forever remain unknown,
For want of words I thank thee not,
Knowing full well it can never be enough.

All I have to offer thee,
My insignificant service at thy holy feet,
Should I ever get the chance,
Blessed, thrice blessed, my life will be.

Salutations a million times and more,
I prostrate myself at thy lotus feet,
A veritable blessing upon this earth,
Hail Maharaj, all hail to thee!

*(A Sadhak)*

# Message from Pujya Swami Muktanandaji, Anandashram

'So far as man can sweep his thought into the earliest origins of the history of mankind, he cannot fail to observe all through its course, a galaxy of souls standing out as distinctly different in nature, temperament and vision from the common run of human beings. True to this tradition, souls of a high order have blessed this great land of ours with their holy presence, from time to time, and helped humanity to improve their standard of life,' says our revered Master Swami Ramdas (Beloved Papa). Pujya Swami Vishwa Mitterji Maharaj is such a great soul.

Beloved Papa also adds: 'The aim of a saint's life is to spend all its energies physical, mental and spiritual for the welfare of humanity. The struggling and distressed souls call for his sympathy, goodwill and help. He is, by nature, all kindness, mercy and love. So at every step, his life is poured out as a selfless dedication for the removal of pain and misery in the world, in whatsoever form they exist. Blessed are they who share with the saint in acts of service'. We find all the above in the life and Mission of Pujya Maharajji.

Swami Vishwa Mitterji Maharaj was closely associated with Anandashram for several decades. His devotion to Beloved Papa, Pujya Mataji Krishnabai and Pujya Swami Satchidanandaji was instrumental in his translating many of the Ashram's books into Hindi and Maharaj took special efforts for distributing them among devotees there. The love and meticulous care and concern poured by him on all visiting devotees from the Ashram is remembered with gratitude and respect.

Pujya Maharajji conveyed much through a few words. His scientific medical educational background enabled him to convey spiritual truths with a scientific perspective. He was indeed an incarnation of humility and service to humanity. He never considered himself a Guru, but always a servant of all. This self-effacing nature, in the face of such great personal achievements, attracted everyone to him. True to the words in Sreemad Bhagavd Gita, Pujya Maharajji also dropped his body, while chanting Ram Naam, exactly like his Gurudev.

On Gandhiji's passing away, Vinobaji said, 'When I heard of Bapu's death my immediate reaction was: now he has become immortal. Time has only strengthened that conviction. When Bapu was in the body, it took time to go and meet him; now it takes no time at all. All I need do is close my eyes and I am with him. When he was alive I buried myself in his work, and went to talk with him only now and then. Now, I talk with him all the time and feel his presence near me.' The sages speak to us of the immense range of the soul, the Self; we reverently accept their teaching. So long as a great soul lives in the body his power is limited, but when he is released from the body his power knows no bounds. Similarly with Pujya Maharajji, we can always reach out to him when we close our eyes. Though devotees miss his physical form, he continues to inspire innumerable aspirants. We offer our humble namaskars at the holy feet of our most beloved Maharajji. ■

जिसका राम प्यारे से सम्बन्ध है,
उसके भीतर आनन्द ही आनन्द है।

## संस्मरण - 'परम पूजनीय महाराज जी की सुजानपुर में दिनचर्या'

जब परम पूज्य महाराज जी, परम पूजनीय प्रेम जी महाराज की आज्ञा लेकर सुजानपुर जाते तो मिलने वालों का मेला लग जाता था। परम पूज्य महाराज जी की अपने जाप–पाठ की रुटीन में कोई चेंज नहीं आता था। यदि जाप–पाठ के समय कोई साधक घर पर आ जाते तो परम पूज्य श्री महाराज उन्हें भी ध्यान में बिठा लेते। कुछ लोग तो खासतौर पर उनके साथ ध्यान में बैठने के लिए ही आते थे। परम पूज्य महाराज जी के आने से सुजानपुर में हर्षोल्लास बढ़ जाता था। ऐसा लगता था कि वहाँ के निवासी परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी से प्रार्थना करते होंगे कि सर्दी की छुट्टी में उन्हें अवश्य यहाँ भिजवाया करें और उनकी यह प्रार्थना सुन भी ली जाती थी। उन दिनों छत पर बैठ कर परम पूज्य महाराज जी साधकों से मिलते और धूप का आनन्द भी लेते। परम पूजनीय माता जी भी पूरा पूरा दिन उनके साथ ही बितातीं और परम पूज्य महाराज भी अकसर उन्हें अपने साथ–साथ ही रखा करते, चाहे किसी भी तरह की चर्चा हो– आध्यात्मिक या घरेलू। सुजानपुर के साधकों की कोशिश होती थी कि वे परम पूज्य महाराज जी की किसी भी तरह की सेवा करें। 1991 में उसी हॉल में सत्संग हुआ, जहाँ परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज ने 1978 में सत्संग किया था। वहीं से परम पूज्य श्री महाराज ने प्रवचन व सत्संग शुरु किया। दोपहर को श्री महाराज जी ने कुछ साधकों से बात की और शाम को सत्संग था, पहले दिन पूरा हॉल भरा था, दूसरे दिन हॉल, वरांडा और कमरे भी भर गए और तीसरे दिन लोगों को सीढ़ियों में बैठना पड़ा। अगले दिन परम पूज्य श्री महाराज से आज्ञा लेकर बड़े हॉल में सत्संग हुआ। इस तरह से यह कार्यक्रम शुरु हुआ और फिर दिन दुगनी रात चौगनी तरक्की करने लगा।

*(सुजानपुर में परम पूजनीय महाराज जी का बालपन बीता। यहाँ उनका पैतृक घर है। यह बात परम पूज्य श्री महाराज जी के तिलक होने से पहले की है।)* ■

### बच्चों के लिए

## कृपया परम पूजनीय गुरुजनों की प्रिय धुनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

- राम राम कहिए सदा______________रहिए।
- वन्दे रामम् ____________________।
- मेरे राम सर्वाधार, बार बार _____________।
- जाके राम धनी, वाको काहे की__________।
- पाया पाया पाया, मैंने राम ______धन पाया।
- पतितों को तुम करो _________________।<br>हे राम सीता, हे राम सीता।
- देदो राम देदो_______________,<br>मीठी_______________देदो राम।
- करो दया मेरे राम राया।<br>छल न सके ये _______________माया।
- मुझे अपने रंग में रंग दो माँ।<br>मुझे _______________रंग में रंग दो माँ।
- जिन प्रेम कियो, तिन ही _________ पायो।
- राम राम जपते जाओ,<br>अपना _______________करते जाओ।
- ज्यों राम नचायें, त्यों _______________जी।
- जग में सीता राम का, होवे ____________।
- मानव जन्म अनमोल रे,<br>माटी में न _______________रे।
- क्षमा करो मेरे राम रघुनाथ।<br>अब तक के सारे _______________।

(उत्तर – सुखी, सच्चिदानन्दम्, नमस्कार, कमी, नाम, पुनीता, राम –वाणी, छलनी, भक्ति, प्रभु, काम, नच्चो, जय जयकार, रोल, अपराध) ■

# 'लीनता' : 'प्रार्थना और उसका प्रभाव'

सत्यानन्द

स्व–पर के कल्याणार्थ, निष्काम प्रार्थना करने वाला, जिस भी भाव को लक्ष्य बना कर जप पाठ करता करता, उसी जप आदि में, लीनता में चला जाए, अपने आप को लय कर दे, देश काल को, तू मैं के भेद को भूल जाए और एकाग्रता लाभ कर ले–चाहे वह कुछ एक क्षणों के लिए ही हो–तो उस समय वह सूक्ष्म स्तर में होता है; वह ब्राह्मी अवस्था में पहुँच जाता है। उस समय वह परम पुरुष दयालु, देवाधिदेव के समीपतम हुआ करता है; उस का उस स्तर में स्फुरित किया हुआ संकल्प, उल्लास, मानस तरंग–भागवत लोक के स्वर विलास के साथ ही मिला हुआ होता है; इसलिये उस तरंग की गति बहुत प्रबल, सुदूर गामिनी तथा सफलता दायिनी कही गई है।

परम विश्वास से, पूरी श्रद्धा से, सुदृढ़ निश्चय से, तत्परतापूर्वक जप आदि के आराधन करने पर यह लीनता की लय अवस्था, स्वयमेव प्राप्त हो जाती है; ऐसी अवस्था में स्थिर होकर प्रार्थना–कर्ता जन, स्व संकल्प के बल से, अधिक से अधिक संख्या में दूसरे जनों को लाभ पहुँचाने और अपने आप को विमल, विशुद्ध बनाने में समर्थ समझा जाता है।

ऐसे प्रार्थना–शील मनुष्य के विचार अपने आप ऐसा ही विस्तार पाते हैं जैसे देदीप्यमान दीपक की ज्योति चहुँ ओर फैला करती है और प्रफुल्ल कमल की सुगन्धि, स्वयमेव सब ओर निःसृत होती रहती है। ऐसे विमल मन के, सच्चे भाव के, सुशील प्रार्थना–शील जन, यदि एकाकी अथवा मिल कर प्रार्थना करें तो उन के स्व–पर का कल्याण, सुधार, शीघ्र होना बहुत ही सम्भावित है– ''मन्त्र''

**अविचल निश्चय हो परम,**
**परम पुरुष में एक।**
**श्रद्धा परम विश्वास हो,**
**संशय त्याग अनेक।।**

*(स्त्रोतः परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा रचित 'प्रार्थना और उसका प्रभाव')* ■

## मुझे अपने रंग में रंग दो माँ,
## मुझे भक्ति रंग में रंग दो माँ।

# 'प्रार्थना में विश्वास'

प्रेम

(यहाँ परम पूजनीय प्रेम जी महाराज, स्वामी जी महाराज के प्रार्थना सम्बन्धी विचारों के बारे में बता रहे हैं। यह प्रसंग परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से लिया गया है।)

महाराज के पास कोई चला जाता तो उसके लिए प्रार्थना किया करते थे– कि परमेश्वर तू कृपा कर। कोई इसी विश्वास से अगर प्रार्थना करता है, माँ को अपने पास समझ कर पुकारता है, माँ सुनती है और कामना पूरी कर देती है। किसी के लिए अन्याय न माँगें। जब कोई माँग पूरी हो जाए – तो विश्वास बढ़ जाता है माँ को नमस्कार कर, धन्यवाद किया करते। जो कोई परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं– 'मैं इस योग्य भी नहीं' – कृपा और होती है। जब हम परमेश्वर की चरण शरण में जाते हैं, मन में कोई कामना नहीं रखनी चाहिए। जिसने अपने मन बुद्धि को अर्पित कर दिया– उसको किसी चीज़ की जरुरत नहीं होती। सब चीज़ें उसके पास आ जाती हैं। उसका हाथ मेरे सिर पर है फिर किस चीज़ के लिए व्याकुल होना। जो भक्त होते हैं उन्हें किसी चीज़ की जरुरत नहीं होती, दूसरों के उपकार के लिए तत्पर रहते हैं। जो दूसरों के लिए काम करते हैं, प्रभु को वह प्यारे होते हैं।

जो परमेश्वर की चरण शरण में चला जाए, वह स्वयं चिन्ता करेगा। चिन्ता माँ को होती है, बच्चे को नहीं। यदि अपने आपको बच्चा समझ कर चरण शरण में अर्पित कर दें– तो विश्वास रखें कि परमेश्वर की कृपा होने लग जाती है। उसी प्रकार जैसे switch on करने पर बिजली जल जाती है। परमेश्वर श्री राम की सब पर कृपा हो। कृपा हो।

*(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से, 16.6.1968, परम पूजनीय महाराज जी द्वारा नोट किए गए प्रवचन)*

पूज्य श्री महाराज प्रार्थना का प्रभाव बता रहे थे– कहा कुछ देर की बात है हमारे नीचे वालों का एक नौकर बहुत बीमार हो गया, ऐसा लगा कि चूहे की जहर खा ली है– बेहोश था। दो –तीन डॉक्टरों ने stomach wash किया– खूब कोशिश की। अचेत पड़ा रहा– मैं ऊपर से देख रहा था– रात का समय था। मुझे दिल में बड़ा अफसोस आया– इसे मरना नहीं चाहिए– इतना जवान लड़का है, अच्छा है आते जाते मुझसे राम राम किया करता है। मैंने अपने तरीके से प्रार्थना की तो सुबह देखा–भागता दौड़ता था। लोग समझते थे कि डॉक्टर ने ठीक किया but I know, it was a miracle, by God's Grace.

*(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से 18.12.1975, परम पूजनीय महाराज द्वारा नोट किए गए प्रवचन)*

# 'प्रभु राम से विनय-वार्ता'

**परमात्मा श्री राम, परम-सत्य, प्रकाश-रुप, परम ज्ञानानन्द स्वरुप, सर्वशक्तिमान, एकैवाद्वितीय परमेश्वर, परम पुरुष, दयालु, देवाधिदेव है, तुझको बार-बार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार।।**

हे सच्चिदानन्द–घन परमात्मा ! हे अविनाशी परमात्मा! सर्वअन्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वविद्यमान, अतिशय दयालु कृपालु, करुणानिधि प्रभु, तेरे बच्चे तेरे दरबार में बैठे हैं। हम सब का दण्डवत प्रणाम स्वीकार करो। दया करो, कृपा करो हमारे ऊपर। सत्य है मेरे राम ! तुझे मुँह दिखाने योग्य नहीं, भीतर झाँक कर देखें, तेरे सामने आने के योग्य नहीं। साहस करके परमात्मा तेरे दरबार में आए हैं प्रभु, हमारा बारम्बार प्रणाम स्वीकार करो, स्वीकार करो।

आपकी महिमा अपरंपार है प्रभु। जो असम्भव को सम्भव करदे वही 'राम' है। वही परमात्मा है। परमेश्वर सोचता हूँ, ऐसा कार्यक्रम जो अभी यहाँ शिकागो में करवा रहे हो, हरिद्वार जैसी पुण्य भूमि पर, मातेश्वरी गंगा के किनारे होता है। कुछ और स्थानों पर भी होता है। आज परमेश्वर यहाँ करवा रहे हो। बात यही हुई न, जो जहाँ चाहो करवा सकते हो। जहाँ शुरु हो जाता है, वही स्थान तीर्थ स्थान हो जाता है, वही धरती धन्य हो जाती है। तेरी कृपा अपरंपार है परमात्मा, तेरी महिमा अपरंपार है, अवर्णनीय है, अतुलनीय है। हम सब आपके ऋणी हैं प्रभु।

आपका दासनुदास, परमात्मा ! आपके हजूर में कुछ एक विनतियाँ लेकर आया है, इसी आशा से कि संत महात्मा कहते हैं, "जो भी इस दरबार में आता है, द्वार पर दस्तक देता है, मेरे राम उसकी झोली भर कर भेजते हैं।" कभी कोई, खाली नहीं तेरे द्वार से गया। हमारी खाली झोली भी खाली नहीं जाएगी। भर कर भेजना तेरा स्वभाव है परमात्मा। कहते हैं तू दे दे के नहीं थकता, हम ले ले कर तुझे बिसराते जाते हैं। परमात्मा ! नाशुक्रे हैं, हम। तेरा धन्यवाद भी ठीक ढंग से नहीं करना जानते। लेकिन हे राम! इतने दिनों से जो यहाँ कार्यक्रम करवाए हैं, उन सबके लिए, हमारा रोम रोम आपके प्रति कृतज्ञ है।

**"जो भी इस दरबार में आता है, द्वार पर दस्तक देता है, मेरे राम उसकी झोली भर कर भेजते हैं।" कभी कोई, खाली नहीं तेरे द्वार से गया। हमारी खाली झोली भी खाली नहीं जाएगी।**

भिखारी हैं परमात्मा ! तेरे दरबार के। भीख माँगने के लिये आए हैं। मेरे राम, प्रारब्ध के अनुसार बहुत कुछ मिल रहा है। तू प्रारब्ध भी बदल सकता है। प्रारब्ध में जो लिखा है उसे काट भी सकता है। प्रारब्ध के साथ साथ, तेरी अनुकम्पा है, तेरी कृपा है, सब दिख रहा है। धन की कोई कमी नहीं, किसी चीज़ की कोई कमी नहीं। मेरे जैसा व्यक्ति तो, ये सब कुछ देख कर यही कहेगा, "हे परमात्मा ! हम फिर भी गरीब हैं।" यदि धन से अमीरी होती परमेश्वर, संसार की दृष्टि में तो हैं, लेकिन तेरी दृष्टि में तो बिल्कुल गरीब हैं, दरिद्री हैं। डॉलर होते हुए भी, रुपये होते हुए भी, निर्धन हैं। धनी तो वही है, परमात्मा ! जिसने राम धन कमाया है, संतोष धन कमाया है, जिसने सत्कर्म की पूंजी इकट्ठी करी है, वही है वास्तविक धनवान्। हम तो दिखावे के धनवान् हैं। अधिक खाने वाले, अधिक पीने वाले, अधिक सोने वाले, अधिक बोलने वाले, अधिक सोचने वाले। जीवन में, कोई नियम तो परमात्मा है नहीं। एक ही नियम है – सुबह घर से निकलना, रात को थके मांदे घर पर आना। घर से खा कर जाना, घर आकर खा लेना। आकर सो जाना, यही हमारा जीवन है। काश ! इससे तू संतुष्ट हो जाता।

लोक तो ठीक चल रहा है परमात्मा ! लेकिन परलोक का तो कोई हाल नहीं। यहाँ तो हमें थोड़े दिन ही

रहना है, वास्तव में तो अपने घर ही जाना है, जो दूर है, वहीं जाना है। उसकी अभी कोई चिन्ता नहीं परमात्मा। कोई भेजना, संत महात्मा, जो कुछ बता सके, तेरी बातों का बोध करवा सके – "कहाँ भटकते फिरते हो ? ये सब बड़े आलीशान मकान, इतना सब कुछ, सुख सुविधा मैंने इस लिये प्रदान की हुई है कि आप किसी बात का अभाव महसूस न करके, मेरे नाम का, अधिक से अधिक जाप करो। वह सब कुछ तो, ले रहे हो मेरे से, पर मुझे ही भूल रहे हो। कैसे हो आप ?' यह परमात्मा का उलाहना है। ये परमात्मा की शिकायत है हमारे प्रति।

**मेरे परमात्मा ! सदबुद्धि दे। ये नशे उतार दे हमारे। ये शराब के नशे से बहुत बुरे हैं। भयानक नशा, यश-मान का नशा, उत्कृष्टता का नशा, superiority का नशा।**

धन्य हैं वे, जो ये सब कुछ होते हुए भी, हर प्रकार की सुख सुविधा होते हुए भी, आवश्यकता से अधिक सुख सुविधा होते हुए भी, ईश्वर का नाम जप रहे हैं, उसके पतित पावन नाम का आराधन कर रहे हैं। परमात्मा ! यह दास, उन सबके श्री चरणों में मस्तक झुकाता है, जो नाम की कमाई कर रहे हैं, यह उनका भी दास और तेरा भी दास।

भीख माँगता हूँ सबके लिए। मेरे परमात्मा ! सदबुद्धि दे। ये नशे उतार दे हमारे। ये शराब के नशे से बहुत बुरे हैं। भयानक नशा, यश–मान का नशा, उत्कृष्टता का नशा, superiority का नशा। मेरा मकान उससे बड़ा, मेरे पास उससे अधिक कारें हैं। ये नशे बड़े बरबाद करने वाले हैं। मेरे राम! तेरे अतिरिक्त, ये काम, कोई भी नहीं कर सकता। बाकी चीज़ें तो बाज़ार से मिल जाती हैं, दुकान में मिल जाती हैं, पर ये सब कुछ तेरे द्वार से ही मिलता है। अन्यथा नहीं। किसी संत महात्मा की चरणों की धूलि माथे पर लेने से ही ये सब कुछ होगा, नहीं तो नहीं। तेरी भक्ति, बाज़ार से नहीं मिलती। यह वैराग्य, बाज़ार से नहीं मिलता। भगवत्प्रेम, बाज़ार से नहीं मिलता। परमात्मा! इन सब का दाता तू। तुझ दाता–शिरोमणि से भीख माँगते हैं। आज के बाद, तेरा नाम कभी न भूलें। तुझे कभी न भूलें। जिस प्रकार तू हमें याद करता है परमात्मा ! उससे अधिक तुझे याद करना हमारा परम कर्त्तव्य है। हम तेरे ऊपर कोई एहसान नहीं कर रहे। हमारी भलाई इसी में है और तू हमारा भला ही सोचता है। तू हमारे भले के अतिरिक्त, कुछ सोच ही नहीं सकता। तुझे क्या पड़ी है, तुझे कोई याद करे न करे। तुझे क्या फर्क पड़ता है, यदि तू चाहता है, हम तुझे याद करें तो परमात्मा तुझ जैसा उपकारी कौन? कोई नहीं। तभी कहता हूँ न बार–बार, मेरे राम! तेरा दिया–किया कभी नहीं चुका सकता। परम उपकारी है परमात्मा तू। मां बाप भी नहीं ऐसे निःस्वार्थी, उनको भी कुछ न कुछ चाहिये होता है। तू ही है एक, जो हमारा भला हित चाहता है, कल्याण चाहता है और उसके बदले में कुछ नहीं चाहता।

धन्य है तू मेरे राम। कृपा कर हमारे ऊपर। भक्ति करनी नहीं आती, प्रेम करना नहीं आता, तेरा नाम जपना नहीं आता। दूसरों को दुःख ही दिए हैं जिन्दगी में। दुःखों की खान हैं हम। औरों की तो नहीं, अपनी जानता हूँ, अपने लिये ठोक बजा कर कहता हूं, परमात्मा ! संसार का कोई ऐसा जुर्म नहीं, अपराध नहीं, पाप नहीं, जो मैंने नहीं किया। फिर भी तेरी महिमा है परमात्मा ! जो तू स्वीकार करता है। कैसे भूलें हम तुझे ? कैसे तेरे उपकारों को भूलें ? कैसे भूलें तेरी महानता को, दया को, तेरी कृपा को, तेरी क्षमा को ? परमात्मा ! मुझ जैसा कोई और भी बैठा है तो, उसे भी स्वीकार कर लेना। बाकी सब को आपने स्वीकार कर लिया है। कोई मेरे जैसा निकम्मा, नालायक हो उसे भी अपनी चरण शरण देना, उससे अपना नाम जपवाना, उसके दुःख दूर करना, उसे भी सद्गुणों से सम्पन्न कर देना।

हे राम ! शराब का नशा, तो थोड़ी देर के बाद उतर जाता है, लेकिन ये मान का, धन का, superiority का नशा परमात्मा ! इतनी आसानी से नहीं उतरता और नशे में आदमी लड़खड़ाता है। कभी इधर गिरता, कभी उधर गिरता है। हमारे लिये पाप करने का कारण यही है। परमात्मा ! यह नशा जिसे 'अभिमान' कहते हैं, तेरे आगे झुकने नहीं देता, न तेरों के आगे झुकने देता है। हम पुरुष हैं, हम पति हैं, ये सब कुछ भूलने नहीं देता यह नशा। यदि ये न उतरे तो हे राम! इस जीवन में नम्रता कैसे आयेगी?

उतार परमात्मा, हमारे सिर से ये नशे उतार। तेरे आगे झोली फैला कर बैठें हैं हम सब। हमारी झोलियाँ भर दे। हे ईश्वर ! ये अभिमान, यश मान इनको चकनाचूर कर दे। परमात्मा ! तेरे अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। ये अभिमान टूटे, तो झुकना सीख सकेंगे। तेरे आगे भी और जो तेरे हैं, उनके आगे भी। यह अभिमान है परमात्मा ! जिसके कारण हमें बारम्बार क्रोध का (attack) दौरा, tension का दौरा पड़ता है। यही दौरे हैं, जो हमें दिल के दौरे के लिये तैयार करते हैं। किस बात का नशा है? परमात्मा ! सब कुछ तेरा है मेरा कुछ भी नहीं, यह बात हमारी समझ में आ जाये तो तेरी कृपा से ये नशा भी उतर जाये। कोई सद्‌गुण अपना नहीं, कुछ भी दिया है वह सब अपना नहीं, सब कुछ तेरा है।

''मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सब तोर, तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोर।''

मेरे परमात्मा ! ये सब कुछ तेरा है। तू ही, सब कुछ करवाने वाला है। तू ही, सब कुछ करने वाला है। इसी सत्य का बोध हम सब को करवा। बहुत कुछ माँग लिया है परमात्मा ! पर और किससे माँगें? और कौन है देने वाला? परमात्मा ! कृपा कर, हमारे ऊपर दया कर। हमारे ऊपर, हे साईं ! दया कर, कृपा कर। दाता शिरोमणि! दया कर हमारे ऊपर। हम नालायक, बेशक तुझे भूलते रहें, पर तू न हमें कभी भूलना। मेरे राम ! इससे बड़ा दुर्भाग्य का दिन, इससे बड़ा दुर्दशा का दिन कोई नहीं, जिस दिन तू हमें भूल जायेगा।

मेरे परमात्मा ! देख, तेरे बच्चे तेरे दरबार में हाथ जोड़े, झोलियाँ फैलाए, तेरे आगे भीख माँगते हैं। हम जैसे भी हैं, परमात्मा ! स्वीकार करते हैं, आज से हम और किसी के नहीं, संसार हमारा नहीं है। हम संसार के नहीं। हम तेरे हैं, तू हमारा है। बख़्श, हमें परमात्मा, बख़्श हमें। हम जैसे भी हैं स्वीकार करना। हमें भूलना न मेरे राम !

कभी न भूलना मेरी मां ! हे जगजननी ! हे जगदीश्वरी! हे परमेश्वरी ! हे सर्वेश्वरी ! हे हृदयेश्वरी ! मैं तो हूं कपूत ! पर माता कुमाता कभी नहीं सुनी। तू कभी नहीं भूलना। इसी लिए भीख माँगते हैं तेरे दरबार में, अपने सीने से लगा कर रखना, अपनी गोद में बिठा कर रखना। सब कुछ तेरा है। तूने सब कुछ करवाया है। सब तेरी चरण शरण में समर्पित है। परमेश्वर ! कोई भूल चूक हो गई हो इतने दिनों में, हम भूलनहार हैं, तुझ बख़्शनहार से क्षमा करवाते हैं। क्षमा करो परमात्मा ! कृपा करो, कृपा करो, कृपा करो मेरे राम।

## अनुभूतियाँ

# 'गुरुजनों ने मेरी रक्षा की'

2008 की बात है, मैं फीजी और सिडनी में होने वाले खुले सत्संग एवं परम पूजनीय महाराज जी के आगमन की तैयारी कर रही थी। अकसर देर रात तक काम करती थी। हमेशा की तरह, सत्संग के खत्म हो जाने तक मुझे थकान महसूस नहीं होती थी। 9 मई को दिल्ली के समूह की रवानगी के बाद, मैं अन्तिम साधक को एयरपोर्ट पर छोड़ कर वापिस लौट रही थी कि मेरी गाड़ी की दुर्घटना हो गई। रात के ग्यारह बजे थे और मैं अपने घर से केवल 1 कि.मी. दूर थी। मुझे नींद आ गई और कुछ क्षण के लिए मुझे अपने से कुछ दूर दुर्घटना की आवाज़ें सुनाई दे रहीं थीं। तब मेरी आँख खुली, मैंने अपनी कार से धुआँ उठते देखा। मैंने गाड़ी के ड्राईवर वाले दरवाज़े को खोलने की कोशिश की वह ट्रक से जाम हो गया था। फिर मैं पिछले दरवाज़े से बाहर आ गई। तभी दो औरतें मेरे बचाव के लिए आईं। ''आप ठीक तो हैं?'' उन्होंने मुझसे पूछा। मेरी गाड़ी ट्रक से टकराकर चारों और से पिचक गई थी। पर मेरे शरीर पर एक भी खरोंच नहीं आई।

उस दृश्य को देखने वाले किसी भी व्यक्ति को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि इसमें कोई बचा भी होगा। पुलिस वालों ने मुझे पूछा कि आपकी रक्षा कौन कर रहा था—मैं जानती हूँ कि मेरे गुरुजनों ने ही मेरी रक्षा की। ■

# विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

## जनवरी से मार्च 2015

### साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

**मुम्बई**, में 4 जनवरी को दो दिवसीय खुले सत्संग के पश्चात् 77 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**दाहोद**, गुजरात, में 9 जनवरी को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के उपरान्त 3861 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इस सत्संग में लगभग 6000 व्यक्ति सम्मिलित हुए।

**कुशलगढ़**, राजस्थान, में 10 जनवरी को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के पश्चात् 7315 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इस सत्संग में लगभग 10000 व्यक्ति सम्मिलित हुए।

**झाबुआ** में 11 से 13 जनवरी तक खुला सत्संग हुआ, जिसमें 6656 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। प्रत्येक बैठक में लगभग 5000–6000 व्यक्ति सम्मिलित हुए।

**इन्दौर**, म.प्र में 24–27 जनवरी को साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 254 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**पूणे** में 28 फरवरी को होने वाले श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के प्रचार के लिए 27 जनवरी को प्रचार सत्संग हुआ जिसमें राज्य रिर्जव पुलिस बल के सैंकड़ों जवान सम्मिलित हुए। 22 जवानों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**रोहतक**, हरियाणा में 1 जनवरी से 1 फरवरी तक हुए अखण्ड जाप की पूर्ति पर 392 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। उस दौरान 18 करोड़ जाप हुआ।

**हाँसी**, हरियाणा, में 6 से 9 फरवरी को साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 91 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**भोपाल**, म.प्र में 13 से 15 फरवरी को श्री रामायण पाठ का शिविर लगा। जिसमें भोपाल के अतिरिक्त 23 अन्य स्थानों से साधक भी सम्मिलित हुए। इस दौरान 165 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**बिलासपुर**, हि.प्र. में 20 से 22 फरवरी तक खुला सत्संग हुआ, 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**पूणे** में 28 फरवरी को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के उपरान्त नाम दीक्षा हुई।

**भरेड़ी**, हि.प्र. में 1 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग के उपरान्त नाम दीक्षा हुई।

**कोल्हापुर**, महाराष्ट्र में 1 मार्च को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के उपरान्त नाम दीक्षा हुई।

**दिल्ली** श्रीरामशरणम् में 4 से 6 मार्च को होली सत्संग का आयोजन हुआ। जनवरी व फरवरी माह में 100 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**आगामी कार्यक्रम -**

**दिल्ली** श्रीरामशरणम् में परम पूजनीय श्री महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में 15 मार्च को प्रातः साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् श्रीरामायण जी का अखण्ड पाठ आरम्भ होगा इसकी पूर्ति 16 मार्च को प्रातः 7 से 8 बजे भजन, कीर्तन व प्रवचन के साथ होगी।

**सतना**, म.प्र. में 21 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन होगा। उद्घाटन के पश्चात् नाम दीक्षा होगी।

**नरोट मेहरा**, पंजाब में 26 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन होगा। उद्घाटन के पश्चात् नाम दीक्षा होगी।

### निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

**सुजानपुर**, पंजाब में साधकों के ठहरने के लिए दूसरी मंजिल का काम चल रहा है।

**तिब्बड़**, पंजाब में श्रीरामशरणरम् के हॉल का ढ़ाँचा तैयार हो गया है, शेष काम कुछ समय बाद आरम्भ होगा। ■

**दिल्ली श्रीरामशरणम् का उद्घाटन
13 अप्रैल 1962 को
परम पुजनीय प्रेम जी महाराज
के कर कमलों द्वारा हुआ।**

| श्रीरामशरणम् दिल्ली में होने वाली नाम दीक्षा (अप्रैल से जून 2015) | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | 19 अप्रैल | रविवार | प्रातः 10.30 |
| 2. | 17 मई | रविवार | प्रातः 10.30 |

| अन्य केन्द्रों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | 5 अप्रैल | मण्डी | रविवार |
| 2. | 14 अप्रैल | ज्वाली (हि० प्र०) | मंगलवार |
| 3. | 26 अप्रैल | सुवा, फिज़ी | रविवार |
| 4. | 3 मई | बा, फिज़ी | रविवार |
| 5. | 16 जून | मनाली | मंगलवार |
| 6. | 28 जून | अमेरिका | रविवार |

| साधना-सत्संग : (अप्रैल से दिसम्बर 2015) | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | 31 मार्च से 5 अप्रैल | हरिद्वार | मंगलवार से रविवार |
| 2. | 30 जून से 3 जुलाई | हरिद्वार | मंगलवार से शुक्रवार |
| 3. | 26 से 31 जुलाई | हरिद्वार | रविवार से शुक्रवार |
| 4. | 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर | हरिद्वार | बुधवार से शनिवार |
| 5. | 5 से 8 अक्तूबर | हरिद्वार(झाबुआ साधकों के लिए) | सोमवार से गुरुवार |
| 6. | 13 से 22 अक्तूबर | हरिद्वार रामायणी | मंगलवार से गुरुवार |
| 7. | 11 से 14 नवम्बर | हरिद्वार | बुधवार से शनिवार |
| 8. | 27 से 30 नवम्बर | ग्वालियर | शुक्रवार से सोमवार |

| खुले सत्संग : (अप्रैल से दिसम्बर 2015) | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | 5 अप्रैल | मण्डी | रविवार |
| 2. | 14 अप्रैल | ज्वाली (हि० प्र०) | मंगलवार |
| 3. | 25 से 26 अप्रैल | सुवा फिज़ी | शनिवार से रविवार |
| 4. | 2 से 3 मई | बा फिज़ी | शनिवार से रविवार |
| 5. | 14 से 16 जून | मनाली | रविवार से मंगलवार |
| 6. | 25 से 28 जून | अमेरिका | गुरुवार से रविवार |
| 7. | 11 से 12 जुलाई | हिसार | शनिवार से रविवार |
| 8. | 15 से 16 अगस्त | रोहतक | शनिवार से रविवार |
| 9. | 5 से 6 सितम्बर | रतनगढ़ | शनिवार से रविवार |
| 10. | 18 से 20 सितम्बर | गुरदासपुर | शुक्रवार से रविवार |
| 11. | 25 से 27 सितम्बर | सिडनी अस्ट्रेलिया | शुक्रवार से रविवार |
| 12. | 9 से 11 अक्तूबर | जम्मू | शुक्रवार से रविवार |
| 13. | 24 से 25 अक्तूबर | रेवाड़ी | शनिवार से रविवार |
| 14. | 1 नवम्बर | अमृतसर | रविवार |
| 15. | 7 से 8 नवम्बर | पठानकोट | शनिवार से रविवार |
| 16. | 21 से 22 नवम्बर | कपूरथला | शनिवार से रविवार |
| 17. | 19 से 20 दिसम्बर | सूरत | शनिवार से रविवार |
| 18. | 26 से 27 दिसम्बर | सुजानपुर | शनिवार से रविवार |

| पूर्णिमा की तिथियाँ (अप्रैल से जून 2015) | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | 4 अप्रैल | शनिवार | |
| 2. | 4 मई | सोमवार | |
| 3. | 2 जून | मंगलवार | |

# ‘सत्य साहित्य’ के उद्देश्य और नियम

## उद्देश्य

1. ‘सत्य साहित्य’ का मुख्य उद्देश्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के लोक कल्याणकारी साहित्य का व्याख्यात्मक शैली से प्रकाशन करना है।
2. ‘सत्य साहित्य’ का दूसरा उद्देश्य है उस साधना पद्धति का प्रचार और प्रसार करना जो सच्ची और सरल है, वेदशास्त्र सम्मत है और भावुक साधकों के अनुभव में आ चुकी है।

## नियम

1. ‘सत्य साहित्य’ हर तीन माह में प्रकाशित होगा।
2. ‘सत्य साहित्य’ में परम पूज्य स्वामी श्री सत्यानंद जी महाराज, परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं परम पूज्य महाराज जी के प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य से सम्बन्धित विचार प्रकाशित होंगे।
3. ‘सत्य साहित्य’ के ‘अनुभूतियाँ’ विभाग में गुरुजनों के सम्पर्क या परिचय में आए हुए साधकों के अपने अनुभव प्रकाशित होंगे।
4. ‘सत्य साहित्य’ के ‘पत्र और उत्तर’ विभाग में साधकों के पत्र और उनके उत्तर उनके पत्रों के आधार पर प्रकाशित होंगे।
5. ‘सत्य साहित्य’ में गुरुजनों के साहित्य और सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखने वाली कविताएँ, गीत आदि भी प्रकाशित हो सकेंगे।
6. ‘सत्य साहित्य’ में प्रकाशनार्थ आई हुई सामग्री को शीघ्र या विलम्ब से प्रकाशित करना श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली, के अधीन होगा।
7. आवश्यकतानुसार नियमों में परिवर्तन, परिवर्धन हो सकेगा, किन्तु ध्येय वही रहेगा जो इन नियमों से प्रकट है।

यदि आप ‘सत्य साहित्य’ की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न॰: 6642